ShodhVarta
An International Peer-Reviewed Journal
www.shodhvarta.in

E-ISSN: 2583-8938
Vol-03 Issue-01

संपादकीय

संवेदना का साहित्य और साहित्य की संवेदना : बदलते प्रतिमान

मानव केवल देहधारी प्राणी ही नहीं है, अपितु संवेदना से आप्लावित होकर अन्य प्राणियों के प्रति सद्भाव रखने वाला एक संवेदनशील प्राणी भी है। यही संवेदना का भाव मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाने वाला कारक है। प्राचीन काल से ही मानव प्रकृति के अन्य प्राणियों से समन्वय और सद्भाव बनाकर रखता आया है और यही कारण है कि मानव ने अनेक जीव जंतुओं को पालतू बनाकर एक श्रेष्ठ जीवन शैली को विकसित किया है। हमारे ऋषियों के आश्रम भी प्रायः प्राकृतिक परिवेश में होने का एक कारण उनकी प्रकृति के साथ समन्वय की प्रवृत्ति रही है। मानव में चेतना का विकास हुआ और उसने गुफाओं और कंदराओं में चित्रों के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति आरम्भ कर दी और धीरे-धीरे लिपि का विकास किया और काव्य और अन्य विधाओं के माध्यम से अपनी वाणी को प्रकट करना आरंभ कर दिया। मानव को वाणी प्राप्त हुई और लिपि के माध्यम से एक ऐसा संसाधन मानव ने विकसित किया जिसने उसे सभी जीवधारियों से भिन्न बना दिया। मनुष्य ने कलाओं को विकसित किया और इन्ही कलाओं में साहित्य का आविष्कार और विकास मानव की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है, जो युगों से मानव की संवेदनाओं का वाहक बनी हुई है।

हिंदी भाषा का साहित्य एक हजार वर्षों की थाती है जिसमें युगीन परिवेश और मूल्य व्यवस्था का विश्लेषण देखने को मिलता है। आदिकालीन सिद्ध, नाथ जैन साहित्य में जहाँ धर्म और दर्शन के भाव निहित थे, वहीं रासो साहित्य इतिहास की वीर रस की परंपरा और सामंती व्यवस्था में निहित श्रृंगारिक मूल्यों के भावों से ओतप्रोत था। आदिकालीन लोक साहित्य उस युग की जनमानस की प्रवृत्ति और संवेदना का संवाहक रहा है। पूर्व-मध्य काल का सम्पूर्ण साहित्य निरंतरता के साथ-साथ नवीन स्थापनाओं और प्रतिमानों के कारण चर्चा में रहा। भाव के स्तर पर इस युग को संवेदनाओं का स्वर्ण युग कहा जाता है, जिसमें मानव मूल्यों की स्थापना इस युग के साहित्य का परम लक्ष्य रहा। वहीं रीतिकालीन साहित्य सामंती और दरबारी श्रृंगारिकता के साथ-साथ छिटपुट राष्ट्रीयता के भावों को संजोए हुए दिखाई देता है।

आधुनिक काल का हिंदी साहित्य विषय और शैली दोनों ही दृष्टियों से समृद्ध हुआ। जहाँ काव्य में मुक्त छंद का प्रचलन हुआ वहीं गद्य में नव्यतर विधाओं के समावेश से साहित्य का फलक विस्तृत हुआ और खड़ी बोली मानक भाषा के रूप में स्वीकृत हुई। आज हिंदी साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-संस्मरण, डायरी और रिपोर्ताज जैसी विधाओं में विपुल साहित्य रचा जा रहा है जो मानवीय संवेदना के विविध पक्षों प्रतिनिधित्व करता रहा है।

आज के प्रतिस्पर्धा से परिपूर्ण इस युग में संवेदना का साहित्य और साहित्य में संवेदना दोनों ही महत्वपूर्ण और विचारनीय प्रश्न बन गए हैं। आज का युग भूमंडलीकरण, उदारीकरण और मशीनीकरण का दौर है, जिसमें संवेदना से अधिक बाजार हावी है और कदापि यही कारण है कि आज साहित्य सृजन के मूल में बहुजन हिताय का भाव गायब होता जा रहा है। आज के साहित्य में बाजार की मांग के अनुरूप नवीन मूल्यों को समाहित किया जा रहा है और साहित्य का मूल लक्ष्य मानव कल्याण आज पीछे छूट रहा है। ऐसी विकट स्थिति में आलोचकों का दायित्व अधिक बढ़ जाता है कि वे साहित्यिक कृति को परखने के प्रतिमानों को युग के अनुरूप बदलते हुए पाठकों तक साहित्य की मूल संवेदना को पहुचाने का कार्य करें। शोधवार्ता का प्रयास ऐसे नवोदित आलोचकों को मंच प्रदान करना है जो साहित्य को संवेदना के धरातल पर बदलते हुए प्रतिमानों के अनुरूप परखने का प्रयास करते हैं। प्रस्तुत अंक ऐसी ही मूल्यवान कृतियों और शोधालेखों के समिश्रिण से परिपूर्ण एक संतुलित प्रयास कहा जा सकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शोधवार्ता का यह अंक पाठकों और सुधीजनों की आशाओं पर पूरा उतरेगा। शुभेच्छा के साथ....

सह-संपादक